संवादहीनता के विरोध में रचनाधर्मिता

शिवकुमार श्रीवास्तव

Scanned with OKEN Scanner

संवादहीनता के विरोध में रचनाधर्मिता

शिवकुमार श्रीवास्तव
कुलपति
डॉ० हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मध्य प्रदेश

साहित्यवाणी
28, पुराना अल्लापुर, इलाहाबाद-211006

Scanned with OKEN Scanner

ISBN 81-86295-18-6

प्रकाशक □ साहित्यवाणी
28, पुराना अल्लापुर
इलाहाबाद-211006

कॉपीराइट □ शिवकुमार श्रीवास्तव

संस्करण □ प्रथम 1998

मूल्य □ एक सौ पचीस रुपये मात्र

आवरण □ चन्द्रदीप, इलाहाबाद

लेज़र कम्पोजिंग □ प्रयागराज कम्प्यूटर्स
13, मोतीलाल नेहरू रोड
इलाहाबाद

मुद्रक □ भार्गव आफसेट
1, बाई का बाग
इलाहाबाद-211003

Scanned with OKEN Scanner

क्रम

रचनाधर्मिता का स्वरूप 7-48

वाल्मीकि और होमर 9
कालिदास की पीड़ा और पराधीनता का दुःख 15
आल्हा : एक कालजयी लोककाव्य 23
संस्कृति और साहित्य में सांप्रदायिकता विरोधी स्वर : (विशेष संदर्भ-मध्य कालीन काव्य) 31
नई कविता का प्रस्थान बिन्दु : तार सप्तक 44

संवादहीनता के विरोध में 49-122

संवादहीनता के विरोध में रचनाधर्मिता 51
आधुनिकता और साहित्य 55
राजनीति और साहित्य : अन्तःसंबंध 62
वियोगी होगा पहला कवि : एक मिथ्या धारणा 69
परकाय प्रवेश का मिथक और रचना कर्म 73
रिश्ता जीवन और मरण का 77
गालियाँ : साहित्य और समाज में 82
अश्लीलता, साहित्य और कलाओं के संदर्भ में 86
ऐन्द्रियता की कविता 100
लोक संस्कृति के उपादान 105
कला विधाओं का अन्तरावलम्बन और उत्तर-आधुनिकता 108
परम्परा का यात्रा पथ 113
शैलाश्रयों के भित्ति चित्र : आदिम पाठ्य पुस्तकें 116
सरस्वती के लुप्त होने का निहितार्थ : सारस्वत-साधना का अंत 119

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner